RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-04
Issue-02
February -2019

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com [UGC Listed Journal]

भगत सिंह का राष्ट्रवादी जीवन

[1]रेनू शर्मा; [2]डा. दीपक सिंह

[1]शोधार्थी श्री वेंकटेश्वर विश्वविद्यालय, गजरौला (उत्तर प्रदेश)
[2]शोध पर्यवेक्षक श्री वेंकटेश्वर विश्वविद्यालय, गजरौला (उत्तर प्रदेश)

भगत सिंह भारत के प्रमुख स्वतंत्रता सेनानी थे। भगत सिंह ने देश की आजादी के लिए जिस साहस के साथ शक्तिशाली ब्रिटिश सरकार का मुकाबला किया, वह आज के युवकों के लिए एक बहुत बड़े आदर्श हैं। इन्होनें केन्द्रीय संसद में बम फेंक कर भी भागने से मना कर दिया। जिसके फलस्वरूप इन्हें 23 मार्च 1931 को दो अन्य साथियों राजगुरू और सुखदेव के साथ फाँसी पर लटका दिया गया। पहले लाहौर में साण्डर्स–वध और उसके बाद दिल्ली की केन्द्रीय असेम्बली में चन्द्रशेखर आजाद व पार्टी के अन्य सदस्यों के साथ बम–विस्फोट करके ब्रिटिश साम्राज्य के विरूद्ध खुले विद्रोह को बुलन्दी प्रदान की। भगत सिंह को अराजकतावादी और मार्क्सवादी विचारधारा में रूचि थी।

भगत सिंह का जन्म 27 सितंबर 1907 को हुआ था। उनके पिता का नाम सरदार किशन सिंह और माता का नाम विद्यावती कौर था। यह एक सिख परिवार था। अमृतसर में 13 अप्रैल 1919 को हुए जलियाँवाला बाग हत्याकाण्ड में भगत सिंह की सोच पर गहरा प्रभाव डाला था। लाहौर के नेशनल कॉलेज की पढ़ाई छोड़ कर भगत सिंह ने भारत की आजादी के लिए नौजवान भारत सभा की स्थापना की थी। काकोरी काण्ड में राम प्रसाद 'बिस्मिल' सहित 4 क्रान्तिकारियों को फाँसी और 16 अन्य को कारावास की सजाओं से भगत सिंह इतने अधिक उद्विग्न हुए कि पंडित चन्द्रशेखर आजाद के साथ उनकी पार्टी हिन्दुस्तान रिपब्लिकन ऐसोसिएशन से जुड़ गये और उसे एक नया नाम दिया हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन।

उनका परिवार राजनीतिक रूप से सक्रिय था। उनके दादा अर्जुन सिंह, हिन्दु आर्य समाज की पुनर्निर्मिति के अभियान में दयानंद सरस्वती के अनुयायी थे। इसका भगत सिंह पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ा। भगत सिंह के पिता और चाचा करतार सिंह और हरदयाल सिंह द्वारा चलाई जा रही गदर पार्टी के भी सदस्य थे। अजित सिंह पर बहुत सारे कानूनी मुकदमे होने के कारण उन्हें निर्वासित किया गया जबकि स्वर्ण सिंह की 1910 में लाहौर में ही जेल से रिहा होने के बाद मृत्यु हो गई। 1919 में, जब वे 12 साल के थे, तब जलियाँवाला बाग में हजारों निःशस्त्र लोगों को मारा गया। जब वे 14 साल के थे वे उन लोगों में से थे जो अपनी रक्षा के लिए या देश की रक्षा के लिए ब्रिटिशों को मारते थे। भगत सिंह ने कभी महात्मा गांधी के अहिंसा के तत्व को नहीं अपनाया, उनका यही मानना था कि स्वतंत्रता पाने के लिए हिंसक बनना बहुत जरूरी है। वे हमेशा गांधी जी के अहिंसा के अभियान का विरोध करते थे, क्योंकि उनके अनुसार 1922 के चौरी चौरा कांड में मारे गये ग्रामीण लोगों के पीछे का कारण अहिंसक होना ही था। तभी भगत सिंह ने कुछ युवाओं के साथ मिलकर क्रान्तिकारी अभियान की शुरूआत की, जिसका मुख्य उद्देश्य हिंसक रूप से ब्रिटिश राज को खत्म करना था।

भगत सिंह में बचपन से ही देशसेवा की प्रेरणा थी। उन्होनें हमेशा ब्रिटिश राज का विरोध किया। और जो उम्र खेलने कुदने की होती है उस उम्र उन्होनें एक क्रान्तिकारी आंदोलन किया था। भगत सिंह की बहादुरी के कई किस्से हमें इतिहास में देखने को मिलेंगे। वे खुद तो बहादुर थे ही लेकिन उन्होनें अपने साथियों को भी बहादुर बनाया था और ब्रिटिशों को अल्पायु में ही धुल चटाई थी। वे भारतीय युवाओं के आदर्श हैं और आज के युवाओं को भी उन्हीं की तरह स्फुर्तिला बनने की कोशिश करनी चाहिए।

भगत सिंह ने सबसे पहले नौजवान भारत सभा ज्वाइन की, जब उनके घर वालों ने उन्हें विश्वास दिला दिया कि वे अब उनकी शादी की नहीं सोचेंगे, तब भगत सिंह अपने घर लाहौर लौट गए, वहां उन्होनें कीर्ति किसान पार्टी के लोगों से मेलजोल बढ़ाया और उनकी पत्रिका 'कीर्ति' के लिए कार्य करने लगे। वे उसके द्वारा देश के नौजवानों को अपने संदेश पहुंचाते थे। भगत सिंह बहुत अच्छे लेखक थे, जो पंजाबी उर्दू पेपर के लिए भी लिखा करते थे। 1926 में नौजवान भारत सभा में भगत सिंह को सेक्रेटरी बना दिया गया, इसके बाद 1928 में उन्होनें हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन ज्वाइन कर ली, जो एक मौलिक पार्टी थी, जिसे चन्द्रशेखर आजाद ने बनाया था। पूरी पार्टी ने साथ मिलकर 30 अक्तुबर 1928 को भारत में आये साइमन कमिशन का विरोध किया, जिसमें उनके साथ लाला लाजपत राय भी थे। 'साइमन वापस जाओ' का नारा लगाते हुए वे लोग लाहौर

RRIJM 2015, All Rights Reserved

रेलवे स्टेशन में ही खड़े रहे, जिसके बाद वहां लाठी चार्ज कर दिया गया, जिसमें लाला जी बुरी तरह घायल हुए और फिर उनकी मृत्यु हो गई।

लला लाजपत राय की मौत का बदला लेने के लिए क्रान्तिकारी साथी बटुकेश्वर दत्त के साथ मिलकर भगत सिंह ने वर्तमान नई दिल्ली स्थित ब्रिटिश भारत की तत्कालीन सेण्ट्रल एसेम्बली के सभागार संसद भवन में 8 अप्रैल 1929 को अंग्रेज सरकार को भगाने के लिए बम और पर्चे फेंकने के बाद वहीं पर दोनों ने अपनी गिरफ्तारी भी दी। और उन्हें 116 दिनों की जेल भी हुई थी। भगत सिंह को महात्मा गांधी की अहिंसा पर भरोसा नहीं था। 23 मार्च 1931 को शाम के करीब 7 बजकर 33 मिनट पर भगत सिंह और उनके दो साथियों सुखदेव और राजगुरू को फाँसी दे दी गई। और मरते वक्त भी उन्होनें फाँसी के फंदे को चुम कर मौत का खुशी से स्वागत किया।

8 अप्रैल 1929 को भगत सिंह और उनके साथी बटुकेश्वर दत्त ने केन्द्रीय विधान सभा सत्र के दौरान विधान सभा भवन में बम फेंका। बम से किसी को नुक्सान नहीं पहुँचा। उन्होनें घटनास्थल से भागने के बजाए जानबूझ कर गिरफ्तारी दे दी। अपनी सुनवाई के दौरान भगत सिंह ने किसी बचाव पक्ष के वकील को नियुक्त करने से मना कर दिया। जेल में उन्होनें जेल अधिकारियों द्वारा साथी राजनीतिक कैदियों पर हो रहे अमानवीय व्यवहार के विरोध में भूख हड़ताल की। 7 अक्तुबर 1930 को भगत सिंह, सुखदेव और राजगुरू को विशेष न्यायालय द्वारा मौत की सजा सुनाई गई। भारत के तमाम राजनैतिक नेताओं द्वारा अत्यधिक दबाव और कई अपीलों के बावजूद भगत सिंह और उनके साथियों को 23 मार्च 1931 को फाँसी दे दी गई।

1921 में जब महात्मा गांधी ने ब्रिटिश शासन के खिलाफ असहयोग आन्दोलन का आह्वान किया तब भगत सिंह ने अपनी पढ़ाई बीच में छोड़कर आन्दोलन में सक्रिय हो गए। वर्ष 1922 में जब महात्मा गांधी ने गोरखपुर के चौरी–चौरा में हुई हिंसा के बाद असहयोग आन्दोलन बंद कर दिया तब भगत सिंह बहुत निराश हुए। अहिंसा में उनका विश्वास कमजोर हो गया और इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि सशस्त्र क्रांति ही स्वतंत्रता दिलाने का एक मात्र उपयोगी रास्ता है। अपनी पढ़ाई जारी रखने के लिए भगत सिंह ने लाहौर में लाला लाजपत राय द्वारा स्थापित राष्ट्रीय विद्यालय में प्रवेश लिया। यह विद्यालय क्रान्तिकारी गतिविधियों का केंद्र था और यहाँ पर वह भगवती चरण वर्मा, सुखदेव और दूसरे क्रान्तिकारियों के संपर्क में आये।

भगत सिंह ने अपने तकरीबन दो साल के जेल कारावास के दौरान कई पत्र लिखे थे। और अपने कई लेख में पूँजीपतियों की शोषण युक्त नितियों की कड़ी निंदा की थी। जेल में कैदियों को कच्चे–पक्के खाने और अस्वच्छ निर्वास में रखा जाता था। भगत सिंह और उनके साथियों ने इस अत्याचार के खिलाफ आमरण अनशन का आह्वान किया और तकरीबन 64 दिनों तक भूख हड़ताल जारी रखी। अंत में अंग्रेज सरकार ने घुटने टेक दिए और उन्हें मजबूर होकर भगत सिंह और साथियों की मांगे माननी पड़ी। पर भूख हड़ताल के कारण क्रान्तिकारी यातीन्द्रनाथ दास शहीद हो गए।

काकोरी कांड के आरोप में गिरफ्तार हुए तमाम आरोपियों में से चार को मृत्यु दंड की सता सुनाई गई और अन्य सोलह को आजीवन कारावास की सजा दी गई। इस खबर से भगत सिंह को क्रांति के धधकते अंगारे में बदल दिया। उसके बाद भगत सिंह ने अपनी पार्टी 'नौजवान भारत सभा' का विलय 'हिन्दुस्तान रिपब्लिकन ऐसोसिएशन' में कर के नई पार्टी 'हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन' का आह्वान किया। 23 मार्च 1931 को शाम के करीब 7 बजकर 33 मिनट पर भगत सिंह और उनके दो साथियों सुखदेव और राजगुरू को फाँसी दे दी गई। और मरते वक्त भी उन्होनें फाँसी के फंदे को चुम कर मौत का खुशी से स्वागत किया।

संदर्भ सूची

1. उपाध्याय, विश्वमित्र : विदेशों में भारतीय क्रान्तिकारी आन्दोलन, नवयुग पब्लिशर्स, दिल्ली, 1986
2. ओमानन्द, सरस्वती : देशभक्तों के बलिदान, हरियाणा साहित्य संस्थान, रोहतक, हरियाणा, 2000
3. तातेड़, साहेब राज : भारतीय नव जागरण एवं राष्ट्रीय आन्दोलन, प्रथम भाग, खण्डेलवाल पब्लिशर्स एन्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, जयपूर, 2014
4. जैन, कैलाश चन्द : भारत का राष्ट्रीय आन्दोलन, द्वितीय भाग, 1999, युनिवर्सिटी पब्लिकेशन, नई दिल्ली
5. धवन, एम.एल. : भारत का राष्ट्रीय आन्दोलन एवं स्वतंत्रता संघर्ष(1915–1947), भाग–2, अर्जुन पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली, 2003

RRIJM 2015, All Rights Reserved